

## सूरह फील<sup>[1]</sup> - 105

## سُورَةُ الْفِيلِ

### सूरह फील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।<sup>[1]</sup>
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना काँबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "काँबा" को "अबरहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अबरहा" ने अपनी राजधानी "सन्आ" में एक कलीसा (गिरजा घर) बनाया। और लोगों को काँबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई. में 60 हजार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे काँबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो "मुहस्सर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो काँबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहा: तुम ऊँट माँगते हो और काँबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मुत्तलिब ने कहा: मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वयं करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा कि: अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ काँबा के द्वार का कड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहा: हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौड़ने लगता था। इतने में पक्षियों का एक झुंड चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत 3,4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?
3. और उन पर पंक्षियों के दल भेजे?
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।<sup>[1]</sup>

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

1 (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि काँबा को आक्रमण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)